12.32 म० प०

मालदीव में हाल की घटनाओं के बारे में वक्तव्य

प्रधान मन्त्री (श्री राजीव गांधी) : मैं मालदीव की हाल ही की घटनाओं से इस सदन को अवगत कराना चाहता हूं। कल सुब हमें ऐसी खबरें मिलीं कि हमारे पड़ोसी देश मालदीव की राजधानी पर भाड़े के लोगों के एक दल ने हमला किया जिन्हें, जाहिर है कि मालदीव के असन्तुष्ट निर्वासित नागरिकों ने भाड़े पर लिया था। भाड़े के ये लोग समुद्री जहाज में आए। कल सुबह लगभग 4 बजे राजधानी माले में उतरने के बाद उन्होंने तुरन्त कुछ प्रमुख सरकारी भवनों पर कब्जा कर लिया जिनमें रेडियो स्टेशन, टी० वी० स्टेशन तथा संचार केन्द्र शामिल हैं। उन्होंने राष्ट्रपति भवन को भी चारों तरफ से घेर लिया। बताया जाता है कि उन्होंने एक वरिष्ठ मंत्री को तथा बड़ी संख्या में असैनिकों को भी बंधक बना लिया। इस कार्रवाई का स्पष्ट उद्देश्य यह था कि मालदीव की लोकतांत्रिक रूप से चुनी हुई सरकार का तख्ता पलट दिया जाए।

राष्ट्रपति गयूम किसी तरह हमलावरों से बच निकले और उन्होंने राष्ट्रपति भवन से बाहर एक स्थान पर शरण ले ली। उसके थोड़ी देर बाद हमें इस विद्रोह को दबाने के लिए तत्काल सैनिक सहायता की औपचारिक रूप से अपील प्राप्त हुई। कोलम्बो तथा न्यूयार्क स्थित मालदीव के दूतों ने भी इस अनुरोध को दोहराया। नियमित अन्तरालों पर हमें जो खबरें मिल रही थीं उनके अनुसार वहां की स्थिति काफी खराब थी।

मालदीव एक शांतिप्रिय देश है जिसमें कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए थोड़े से सैन्य बल को छोड़कर कोई सशस्त्र सेना नहीं है। राष्ट्रपति गयूम हमारे इस पड़ोसी मित्र देश के लोकतांत्रिक रूप से चुने हुए और लोकप्रिय राष्ट्रपति हैं। उन्हें हाल ही में 23 सितम्बर, 1988 को तीसरी बार पुन: राष्ट्रपति पद के लिए चुना गया था जिसमें उन्हें 95 प्रतिशत से अधिक मत प्राप्त हुए थे। मालदीव हमारे घनिष्ठतम और सबसे अच्छे मित्र देशों में से एक है। उसने मुसीबत की इस घड़ी में हमसे सहायता की अपील की है। इस अपील पर सावधानीपूर्वक विचार करने के बाद हमने महसूस किया कि हमें सकारात्मक प्रतिक्रिया दिखानी चाहिए और अपने एक मित्र पड़ोसी की सहायता करनी चाहिए जिसकी सम्प्रभुता और लोकतांत्रिक व्यवस्था को खतरा पैदा हो गया है।

तदनुसार सावधानीपूर्वक पूर्व नियोजित विकल्पों के साथ टोह करने के उद्देश्य से कल शाम भारतीय वायुसेना के दो विमान वहां भेज दिए गए जिनमें लगभग 300 छाताधारी सैनिक थे। इसके बाद रात को मैंने विपक्षी नेताओं को की गई कार्रवाई से अवगत कराया। मुझे सदन को यह बताते हुए खुशी हो रही है कि वे दोनों विमान सफलतापूर्वक माले के समीप उतर गये। मैं इस अवसर पर सदन को यह बताना चाहूंगा कि एक मित्र पड़ोसी देश की लोकतांत्रिक रूप से चुनी हुई सरकार के समर्थन में हमने क्या कार्रवाई की।

मुझे यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि हमारी सेनाओं ने अपना काम भारत की सशस्त्र सेनाओं की महान परम्परा के अनुरूप उत्कृष्ट तरीके से सम्पन्न किया। उन्होंने अपना प्रमुख काम आज सुबह लगभग 2.30 बजे सफलतापूर्वक पूरा कर लिया था। राष्ट्रपति तथा उनकी सरकार के वरिष्ठ सदस्यों की सुरक्षा का सुनिश्चय किया गया। यह कार्रवाई पूरी तरह से एक निश्चित समय के भीतर इस तरह से की गई कि अब तक एक भी भारतीय हताहत नहीं हुआ है। किसी भी आकस्मिक स्थिति से निपटने के लिए पर्याप्त संख्या में सैनिक उपलब्ध कराने के लिए मालदीव में आज बड़े सवेरे

और सैनिक भेजे गये। कुछ सशस्त्र विद्रोहियों को पकड़ लिया गया है। विद्रोहियों का सफाया करने की कारंवाई चल रही है। हम अपनी सेनाओं को जल्दी से जल्दी वहां से वापिस बुलाना चाहेंगे। हम राष्ट्रपति गयूम के साथ सम्पर्क बनाए हुए हैं तथा सेनाओं की वापसी आज ही शुरू होने की उम्मीद है। राष्ट्रपति गयूम ने आज बड़े सवेरे मुझे टेलीफोन करके हमारी तुरन्त तथा समय से दी गई सहायता की अत्यन्त सराहना की। हमें इस बात की खुशी है कि हम मालदीव की मित्र जनता की सहायता कर सके जिनके साथ हमारे हमेशा से ही घनिष्ठ और सौहार्दपूर्ण संबंध रहे हैं। हमारे क्षेत्र में शांति और स्थायित्व भंग करने तथा आतंक फैलाने की कोशिश को नाकाम कर दिया गया है। मुझे विश्वास है कि यह सदन राष्ट्रपति गयूम और मालदीव की जनता को हमारे देश की शुभकामनाएं तथा समर्थन देने में मेरा साथ देगा। हम अपनी सशस्त्र सेनाओं की सराहना करते हैं और उन्हें हार्दिक बधाई देते हैं। यह सेना के तीनों अंगों की समन्वित कारंवाई थी। जिस गति तथा कार्यकुशलता से इस कारंवाई को नियोजित और कार्यान्वित किया गया, उस पर देश को गर्व है।

उपाध्यक्ष महोदय, मालदीव की घटनाओं पर हमने जो प्रतिक्रिया दिखाई है, वह इस बात की स्पष्ट अभिव्यक्ति है कि हम अपने क्षेत्र में शांति और स्थायित्व को बढ़ावा देने के लिए वचनबद्ध हैं। यह हमारे इस विश्वास के अनुरूप है कि इस क्षेत्र के देश अपनी समस्याओं को आपस में मैत्री और सहयोग की भावना से तथा किसी बाहरी दबाव के बिना सुलझा सकते हैं। हमने इन घटनाओं के बारे में अनेक मित्र देशों से सम्पर्क किया है। मुझे खुशी है कि हमारे रचनात्मक दृष्टिकोण के प्रति पड़ोस के और अन्य देशों की प्रतिक्रिया सकारात्मक रही है।

उपाध्यक्ष महोदय : अब हम संसद् सदस्य वेतन, भत्ता और पेंशन में और संशोधन करने वाले विधेयक पर पुनः चर्चा आरम्भ कर रहे हैं…

श्री इन्द्रजीत गुप्त (बसीरहाट) : महोदय, कितना विरोध मांग है—वेतन, भत्ता और पेंशन ! कम से कम उन लोगों के बारे में कुछ सुनिए जो वहां गए हैं। जिन देशों से सहायता मांगी गई थी, उनकी क्या प्रतिक्रिया है ?

उपाध्यक्ष महोदय : श्री इन्द्रजीत गुप्त, मैं वक्तव्य पर चर्चा की अनुमति नहीं दे सकता। मैं अनुमति नहीं दे सकता। आप इसे अलग से लिखित रूप में दीजिए।

(व्यवधान)

श्री इन्द्रजीत गुप्त : हमसे स्कूली बच्चों की तरह व्यवहार क्यों किया जाए ?

उपाध्यक्ष महोदय : नहीं, नहीं, मैं आपसे स्कूली बच्चों की तरह व्यवहार नहीं कर रहा हूं। मैं केवल परम्पराओं तथा नियमों और विनियमों का पालन कर रहा हूं।

(व्यवधान)

श्री इन्द्रजीत गुप्त : राज्य सभा में वे इस पर पूरी चर्चा कर रहे हैं। **(व्यवधान)**

उपाध्यक्ष महोदय : आप नियमों को बदल दीजिए। मुझे कोई आपत्ति नहीं है। यदि आप इस विषय पर इस प्रकार से चर्चा करना चाहते हैं तो आपको नियम बदलने पड़ेंगे।

(व्यवधान)